रोग और कीट नियंत्रण :

डाउनी मिल्डयू :

बाजरे में डाउनी मिल्डयू रोग एक फफूंद जनित रोग है जिसकी रोकथाम के लिए रीडोमिल 1.5 ग्राम/लिटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

स्मट :

इस रोग के प्रकोप से बाली के दाने हरे रंग के अन्य दानों से बड़े हो जाते है। जिसमें काले रंग का चूर्ण भरा रहता है। इस रोग के होने पर हेक्साकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

अर्गट :

बालियों में फूल आने पर हल्के गाढ़े गुलाबी रंग के चिपचिपे पदार्थ का निकलना तथा बाद में कड़ा हो जाना। इस रोग से बचाव के लिए क्लोरोथालोनिल 3 ग्राम/लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

शूट फलाई :

सूड़ी पौधे के अग्रभाग को खाकर नष्ट कर देती है। शूट फलाई बाजरा को नुकसान करने वाला सामान्य कीट है जिसे स्पाइनोसेड 1 मिली प्रति 4-5 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से कीट नियंत्रित रहता है।

तना छेदक :

तने में छेद करके वर्धिशाख को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम हेतु लेम्डासाइलोथ्रीन 1.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या स्पाइनोसेड 1 मिली प्रति 4-5 लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

परिपक्वता :

बाजरा का पौधा 70 से 80 दिनों में तैयार हो जाती है। अगर चारा के लिए उगाया जाता है तब इसके पौधों की कटाई 55-60 दिनों के अन्तराल पर या 50 प्रतिशत फूल आने पर करनी चाहिए।

उत्पादन :

बाजरा का उत्पादन 30 से 35 क्विन्टल/हे0 होता है और अगर हरे चारा के लिए करते है तब इसका उत्पादन 600 से 800 क्विन्टल/हे0 होता है।

बाजरा का उपयोग :

- बिस्किट बनाने में
- रोटी बनाने में
- बाजरा का खीर बनाने में
- बाजरा का लडडू बनाने में
- हलवा एवं दलिया बनाने में

Print_Maana Flex Gumla_6203781827

संकलन एवं संपादन :- डॉ० संजय कुमार, डॉ० निशा तिवारी,
अटल बिहारी तिवारी, मृत्युंजय कुमार सिंह, योगेश कुमार

भा.कृ.अनु.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-4 पटना

अन्तर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष-2023

INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS 2023

पोषक अनाज बाजरे
(Pennisetum typhoides)
की उन्नत खेती

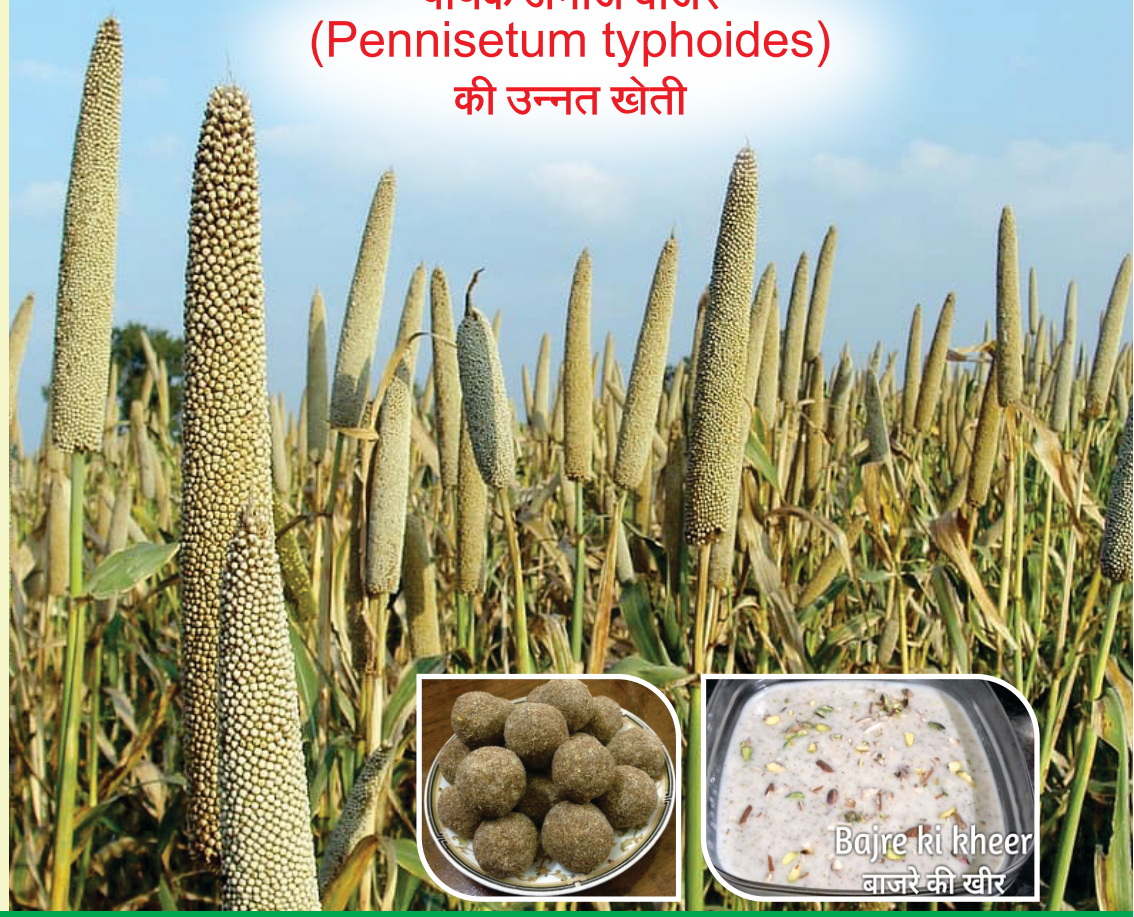

कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला
विकास भारती बिशुनपुर

भा.कृ.अनु.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-4 पटना

अपने देश में मोटे अन्न उत्पादन का आधा हिस्सा बाजरा से प्राप्त होता है। बाजरा देश के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में तथा मुख्य खाद्यान्न के साथ-साथ हरे चारे के रूप में उगाई जाने वाली प्रमुख फसल है। बाजरा खरीफ मौसम में बोई जाने वाली कम लागत और बिना सिंचाई वाली फसल मानी जाती है। इसे कम वर्षा (250-750 मिली. मी.), कम उर्वरता, उच्च लवणता एवं उच्च तापमान वाली जलवायु में भी उगाया जा सकता है। बाजरा देश में प्रमुख रूप से मोटे और गर्म अनाज फसलों की श्रेणी में आता है, जिसकी ज्यादातर मांग और खपत नवम्बर से फरवरी माह तक रहती है। सर्दियों में बाजरा खाने से ठंड कम लगता है, शरीर मजबूत होता है, और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

बाजरे का स्वास्थ्यवर्द्धक लाभ :

- कोलस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल करता है।
- पाचन क्रिया को ठीक रखता है।
- कैंसर को रोकने में मदद करता है।
- वजन कम करने में मदद करता है।
- एनीमिया रोग को ठीक करता है।
- ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखता है।
- मधुमेह को ठीक रखता है।
- अस्थमा दूर करता है।
- शरीर को अधिक उर्जा (एनर्जी) देता है।
- खाद्य रेशा की प्रचुरता।

बाजरे में पोषक तत्व की मात्रा (१०० ग्राम) :

कैलोरी	:	361	कैल्सियम	:	8 मिली ग्राम
प्रोटीन	:	12 ग्राम	फास्फोरस	:	242 मिली ग्राम
वसा	:	5.4 ग्राम	सेलेनियम	:	2.7 मिली ग्राम
रेशा	:	11.5 ग्राम	कॉपर	:	0.8 मिली ग्राम
पोटैशियम	:	195 मिली ग्राम	मैग्नीज	:	1.6 मिली ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	:	72 ग्राम	सोडियम	:	5 मिली ग्राम
लोहा	:	6 मिली ग्राम	आमेगा 3 फैटो एसिड	:	118 मिली ग्राम
मैग्नीशियम	:	114 मिली ग्राम	जिंक	:	1.7 मिली ग्राम

भूमि का चुनाव :

इसके लिए हल्की या बलुई दोमट मिट्टी उचित होती है। बाजरा की खेती के लिए उचित जल निकास वाली टांड़ या मध्यम जमीन उपयुक्त होती है। जिन खेतों में किसान मक्का की खेती करते है, उन खेतों में बाजरा की खेती भी कर सकते हैं। अतः वैसी जमीन जहाँ पानी का जमाव नहीं होता हो वहाँ बाजरा की खेती कर सकते हैं।

खेत की तैयारी :

जमीन की तैयारी के लिए ग्रीष्म ऋतु में एक गहरी जुताई करनी चाहिए। बुआई के पहले समुचित पोषक तत्व पूर्ति करने के लिए 10-15 टन गोबर की खाद प्रति हे0 की दर से खेत में डाल कर अच्छी तरह मिला दें। रासायनिक उर्वरक के रूप में 87 कि.ग्रा. यूरिया 130 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट तथा 33 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हे0 की दर से डालना चाहिए। यूरिया की आधी तथा सिंगल सुपर फास्फेट एवं म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय देनी चाहिए। यूरिया की शेष आधी मात्रा निराई-गुड़ाई के समय देनी चाहिए।

उन्नत प्रभेद :

एम.पी.-7792, एम.पी.-7878, एम.पी.-7872, कॉवेरी सुपर बॉस धनशक्ति दाना/अन्न के लिए : पूसा 443, एच.एच.वी.-216, चारा फसल के लिए : जाइन्ट बाजरा

बीज दर :

4-5 किलो ग्राम/हे0 चारा फसल के लिए : 20 किलो ग्राम/हे0

बुआई की समय :

जून-जुलाई

बीज उपचार :

बीज बोने के पहले बीज को ट्राइकोडर्मा विरीडी 5 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित कर बुआई करने से फफूंदजनित रोगों से बचाव किया जा सकता है

बुआई विधि :

अच्छी उपज के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी : 40 से.मी.
पौधे से पौधे की दूरी : 15 से.मी.
चारा फसल के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी : 30 से.मी.

खर-पतवार नियंत्रण :

रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दूसरे या तीसरे दिन एट्राजिन खरपतवारनाशी 1 से 1.5 ली. मात्रा को 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें तथा जब पौधा 25 से 30 दिनों का हो जाए तब एक से दो बार निकाई-गुड़ाई करके खरपतवार का नियंत्रण करें।